

भक्ति के विघ्न

प्रश्न-भक्ति में सूक्ष्म विघ्न क्या है ?

उत्तर-अपनी भक्ति को जाहिर करने की सूक्ष्म इच्छा ।

वह साधना को सिद्ध नहीं होने देती । जैसे अन्धी आटा पीसती जाय और कुतिया खाती जाय, वैसे ही इच्छा कूकरी साधना का आटा खा जाती है । इसलिए अपने हृदय के भाव को लोगों की नज़र से बचाते रहना चाहिये । जैसे नजर लगी चीज अपने प्यार बच्चे को नहीं खिलाते वैसे ही लोग-लुगाइयों की नजर का शिकार भाव भी प्रियतम को अर्पित नहीं करना चाहिये, रसिक-जनों की यही रीति है ।

प्रश्न-अपनी प्रशंसा की इच्छा न होने पर भी लोगों की नजर विघ्न डाल सकती है क्या ?

उत्तर-हाँ, डाल सकती है । एक सन्त कहते थे कि मुझे स्वप्न में भी भीतर के भाव को जताने की इच्छा नहीं है, तो भी अचानक सत्संग में कोई बात प्रकट हो जाने से विघ्न पड़ता है । इसलिए दिल की बात लब पर न आनी चाहिये । जब भक्त प्रभु के पास पहुँचता है तब वे उससे पूछते हैं-क्यों दोस्त, मेरे लिए कुछ छिपाकर भी लाये हो तब वह उनकी नजर के सामने लोगों की नजर से अछूते अपने दिल के भावों का नजराना नजर करता है । जिसने चंचलतावश अपने भाव के गुप्त मोती बिखेर दिये उन्हें दरबार में कच्चा समझा जाता है । स्वामी श्रीआत्माराम

साहबजू एक कथा कहते थे -‘सिन्ध के सन्त कवि शाह लतीफ घूमते फिरते एक जगह से निकले । उन्होंने देखा कि एक फकीर ‘आ फकीर, ले फकीर, जा फकीर’ यह रट लगा रहा है । कारण पूछने पर उसने अपनी कहानी सुनाई, ‘इस जगह पर एक किसान परिवार रहता था । मैं उनके घर अक्सर भिक्षा के लिए आया करता था । उनकी कन्या ‘आ फकीर’ कहकर बुलाती, ‘ले फकीर’ कहकर भिक्षा देती और ‘जा फकीर’, कहकर हाथ जोड़ती । उसकी मूर्ति मेरी आँखों में और बोली मेरे कानों में समा गयी । छः महीने बाद वे लोग चले गये और मैं बारह वर्ष से यह रट लगा रहा हूँ ।’ शाह लतीफ ने कहा-‘वे किसान मेरे शिष्य हैं । अगर तुम ईश्वर से मेरे लिए कृपा की चिट्ठी दिलाने का वायदा करो तो मैं तुम्हें उस कन्या से मिला सकता हूँ ।’ फकीर ने मन्जूर कर लिया । शाह लतीफ उसे साथ लेकर किसान के पास आये और उस लड़की को अपने पास सेवा में बुलाया । वह लड़की जब कमण्डलु लेकर फकीर के हाथ धुलाने लगी तो सारा जल उस फकीर के हाथों में ही सूख गया । पानी की बूँद भी नीचे नहीं गिरी । उस फकीर की भीतरी आग ने उसे निगल लिया । या प्रियतम की दी हुई वस्तु नीचे कैसे गिराऊँ इस भाव की गाढ़ता में सारा का सारा पानी लीन हो गया । कमण्डलु खाली हुआ । दोनों आशिक माशूक गिर पड़े । दोनों की समाधि साथ-साथ बनी । रात को शाह लतीफ कृपा की चिट्ठी लेने गये और पुकारा । कब्र से वह लड़की निकल आयी और

शाह को कृपा की चिट्ठी दी । शाह ने पूछा-‘फकीर कहाँ है ?’ वह बोली-उसने अपने दिल का हाल आप को सुनाया, इसलिए दरबार में कच्चा माना गया । अब उन्हें बाहर आने की आज्ञा नहीं है ।

इसलिए भक्त को अपनी भावरत्न मंजूषा गहरी भूमि में छिपाकर रखनी चाहिये ।

प्रश्न-भक्त को और क्या सावधानी रखनी चाहिए ?

उत्तर-भाव का स्थान सदा स्वच्छ रखे । हृदय में छल-छिद्र, झूठ-कपट, स्वसुख का भाव न आने पावे, तब प्रेमरस का पूर्ण स्वाद चखेगा । हृदय के शुद्ध सात्विक भाव को केवल प्राण-नाथ ही देखता है । उसकी प्राप्ति सन्तों की कृपा से होती है ।

प्रश्न-सन्तों की कृपा कैसे होती है ?

उत्तर-सरल श्रद्धा, निष्कपट सेवा, सत्य एवं नम्र भाषण से सन्तों की कृपा-दृष्टि होती है । सन्त की क्रिया पर नहीं, दिल पर नजर रखनी चाहिये । गोपी और सन्त तर्क से नहीं जाने जाते । सन्तों की कृपादृष्टि में ईश्वर का निवास है । ईश्वर कृपासे सत्यकथा में भोलेपन से प्रवेश है । भोली-भाली श्रद्धा से प्रेम का अमर फल प्राप्त होता है ।